नाट्यकला

(385)

शिक्षक-अंकितमूल्यांकन-पत्र

पूर्णांक – 20

निर्देश : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के अनुसार अंक सामने दिए गए हैं।

(ii) उत्तर पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम, अनुक्रमांक संख्या, अध्ययन केंद्र का नाम लिखिए।

1. किसी एक प्रश्न का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए- 2

(क) आचार्य भारतमुनि के अनुसार नाट्य के प्रयोजन क्या हैं? (देखें- पाठ-1)

(ख)नाट्य शास्त्र कौनसे अलंकारों का उल्लेख किया गया है। (देखें- पाठ-2)

2. किसी एक प्रश्न का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए- 2

(क) नाट्य-साहित्य के उत्तरकालीन किन्ही चार ग्रंथकारों के नामों का उल्लेख कीजिए। (देखें- पाठ-2)

(ख)चुलिका से आप क्या समझते हैं। (देखें- पाठ-5)

3. किसी एक प्रश्न का उत्तर 40-60 शब्दों में लिखिए- 2

(क) ध्रुवस्वामिनी नाटक का सामान्य परिचय दीजिए। (देखें- पाठ-12)

(ख)प्रबोधचंद्रोदय नाटक के चतुर्थ अंक का संक्षिप्त में सार लिखिए। (देखें- पाठ-13)

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर 100-150 शब्दों में लिखिए- 4

(क) ध्रुवस्वामिनी नाटक की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए। (देखें- पाठ-12)

(ख) प्रबोधचंद्रोदय नाटक की मूलकथावस्तु का विस्तार से उल्लेख कीजिए। (देखें- पाठ-13)

5. किसी एक प्रश्न का उत्तर 100-150 शब्दों में लिखिए- 4

(क) नाटक में मुद्राभिनय और मुखाभिनय के महत्त्व को विस्तार से समझाइए। (देखें- पाठ-17)

(ख) नाट्य में हस्त मुद्राओं का विस्तार से वर्णन कीजिए। (देखें- पाठ-17)

6. नीचे दिए गए किसी एक विषय पर परियोजना रूप में विवरण दीजिए। 6

(क) संस्कृत के प्रमुख नाटककारों की सूची बनाते हुए उनका समय निर्धारण और उनकी कृतियों के विषय में विस्तार से उल्लेख कीजिए। (देखें- पाठ-1)

(ख) रंगमंच के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से वर्णन करते हुए उनकी एक सूची बनाइए। (देखें- पाठ-14)